अंबेडकर नगर के अस्थि विकलांग व सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. ओम प्रकाश यादव
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
रजत कॉलेज, अंबेडकर नगर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अस्थि विकलांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसमें 50 अस्थि विकलांग विद्यार्थी व 50 सामान्य विद्यार्थी लिये गये हैं। इन सभी का संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक समायोजन का अध्ययन किया गया है। तदोपरान्त सम्पूर्ण समायोजन देखा गया तथा पाया कि सामान्य विद्यार्थियों का सम्पूर्ण समायोजन अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है। अस्थि विकलांग बच्चों से तात्पर्य ऐसे बालकों से है जिनकी हड्डियाँ, जोड़ एवं मांसपेसियां सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाते हैं। ऐसे बच्चों को सामान्यतया शारीरिक विकलांग, अपंग या चलन निःशक्त बालक भी कहा जाता है। अस्थि विकलांग बालक उन बालकों को कहा जाता है जिनकी एक या अधिक अस्थियों में दोष आ गया हो जिससे वह उन सामान्य बालकों की मांसपेशियों तथा जोड़ों अथवा अस्थियों में किसी कारणवश दोष आ जाता है। वैधानिक तौर पर वैसे बालकों को अस्थि विकलांग कहा जाता है जो गम्भीर रूप से अस्थि विकलांग है और विकलांगता उनके शैक्षिक प्रदर्शन को गम्भीर रूप से प्रकाशित करती है।

१. प्रास्ताविक

अस्थि विकलांगता किसी भी बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है और यह एक स्वाभाविक तथ्य है क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि के लिये बच्चे का शारीरिक रूप से सक्षम होना आवश्यक होता है। विभिन्न अनुसंधानों से यह प्रमाणित भी होती है कि अस्थि विकलांगता के कारण बच्चे की बुद्धि क्षमता पर प्रभाव डालती है फिर भी इनमें उपलब्धि अर्जित करने की क्षमताआवश्यक रूप से पायी जाती है। यदि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों को विभिन्न तकनीकों एवं उपयुक्त शिक्षण विधियों से अधिगम कराया जाये तो यही बच्चे अपने शैक्षिक जीवन में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित करते हैं। अस्थि विकलांग बालकों में शारीरिक दोष के कारण मनोवैज्ञानिक समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे समायोजन की समस्या, मनोस्नायु विकृतिहीनता की भावना, अवसादग्रस्ता आदि है। अस्थि विकलांग बच्चों की सबसे प्रमुख समस्या अपने परिस्थितियों के साथ उचित समायोजन है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्राचीन काल से ही मानव स्वभाव को उसके उचित समायोजन के लिये जाना जाता है। कई शताब्दी पूर्व में अरस्तू महोदय ने कहा था कि "एक व्यक्ति जो समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ नहीं रहता वह या तो देवता या पशु।" अन्य शब्दों में यदि यह कहा जाये कि मानव की समाज में अलग रहकर जीवन व्यतीत करने की कल्पना नहीं की जा सकती है। क्योंकि व्यक्ति का जीवन उसकी समृद्धि तथा प्रगति समाज में ही सम्भव है। समाज किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के उद्गम स्रोत है। कोई भी व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह धीरे धीरे समाज के सम्पर्क में आता है और समाज के मध्य रहकर उसके साथ अन्तक्रिया करता है।

व्यक्ति अपनी सभी जरूरतों की पूर्ति के लिये अपने समाज पर आश्रित रहता है। इसीलिये व्यक्ति को हर समय समाज तथा वातावरण से समायोजन करने के लिये संघर्ष करना पडता है।

व्यक्तित्व के सामान्य विकास के लिये समायोजन परम आवश्यक है। प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में स्वयं का अनुकूलन ही समाजोजन कहलाता है। स्किनर महोदय ने समायोजन को इस प्रकार दर्शाया है :- "समायोजन के शीर्षक के अन्तर्गत हमारा अभिप्रायः इन बातों से है- सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ्य तथा उत्साहमय ढंग से भाग लेना, समय पड़ने पर नेतृत्व का भार उठाने की क्षमता तक उत्तरदायित्व वहन करना तथा सबसे बढ़कर समायोजन में अपने को किसी प्रकार से धोखा देने की प्रवृत्ति से बचना है।"

गेट्स व अन्य "समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"
स्मिथ के अनुसार "अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है। यह कुण्ठा, तनाव तथा दुश्चिता को जहां तक सम्भव है कम करता है।"

सामान्यता समायोजन की पूर्ण प्रक्रिया में तीन मूलतत्व पाये जाते हैं- प्रेरणा, कुण्ठित करने वाली परिस्थितियाँ तथा विधिक क्रियाएँ।

१. समायोजन की प्रक्रिया किसी मूल आवश्यकता या प्रेरण से आरम्भ होती है।
२. यदि वातावरण की परिस्थितियाँ आवश्यकताओं की संतुष्टि से बाधक बनती है तो व्यक्ति इन बाधाओं को अपने प्रयास द्वारा दूर करने का पूरा प्रयास करता है। इस प्रकार इसी क्रिया से समायोजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। कुण्ठित करने वाली परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक प्रकार की वांछित क्रियाएँ करता है। व्यक्ति के द्वारा की जाने वाली ये अनुक्रियाएँ सामान्य भी हो सकती है तथा असामान्य भी। इन्हीं अनुक्रियाओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति का वातावरण से समायोजन हो जाता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समक्ष सबसे अधिक समस्या समायोजन की होती है। चूँकि अस्थि विकलांग बालकों में चलने फिरने या क्रिया करने में बाधा होती हैं इसीलिये ऐसे बालक अपने विचारों, संवेगों के आदान प्रदान में कठिनाई महसूस करते हैं। ये बच्चे सामान्य बच्चों के साथ रहना, पढ़ना, खेलना चाहते हैं परन्तु उनका सहयोग न मिल पाने के कारण ये अपनी इच्छाओं का दमन करते हैं। इसीलिये अस्थि विकलांग बच्चों में तनाव एवं कुण्ठा उत्पन्न होता है तथा इस प्रकार ये बच्चे अवांछित व्यवहार करने वाले तथा अपराधी हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चों के मित्र भी कम होते हैं। घर के व्यक्ति भी इनके साथ असहयोग पूर्ण व्यवहार करते हैं तो इनका तनाव और सामाजिक कुसमायोजन का स्तर बढ़ जाता है।

विद्यालय में भी ये बच्चे कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं। ये अपनी शैक्षिक समस्याओं से अपने शिक्षकों को अवगत नहीं करा पाते हैं तथा साथ ही इन्हें पढाने के लिये भी अलग अलग शिक्षण विधि का प्रयोग करना पड़ता है। अस्थि विकलांग बच्चो के समक्ष भविष्य में अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न हो जाती हैं जिसमें उनके मुख्य रूप से जीविकोपार्जन के लिये व्यवसाय की समस्या प्रमुख है। इन्हें सुगमता से कहीं भी रोजगार भी नहीं मिल पाता है। अतः इन्हीं परिस्थितियों के कारण अस्थि विकलांग व्यक्ति का वातावरण से समायोजन में अवरोध उत्पन्न होता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिये सुसमायोजन एक आवश्यक शर्त है। हमारे शोध अध्ययन के उद्देश्य अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन पर आधारित है। अतः हमें इस अध्ययन से यह देखना है कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों तथा सामान्य विद्यार्थियों के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन में भिन्नता है अथवा नहीं। प्रस्तुत शोध पत्र इसी में एक प्रयास है।

२. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

व्यक्ति के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिये समायोजन सबसे आवश्यक अंग है। एक सुसमायोजित व्यक्ति ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि जो बच्चे विशेष आवश्यकता वाले होते हैं वे जरूर कुसमायोजन का शिकार होते हैं और यदि इनकी इन मौलिक समस्याओं पर आवश्यक ध्यान न दिया जाये तो यह और भी कुसमायोजन का शिकार होते जाते हैं और परिणामस्वरूप इस प्रकार के बच्चे कक्षा में पिछड जाते हैं या इनकी पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है। इसीलिये अस्थि विकलांग केसमायोजन पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गयी।

३. अध्ययन के उद्देश्य

१. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
२. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थी के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
३. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
४. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

४. शोध की परिकल्पना

शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या " अंबेडकर नगर के अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन के लिये परिकल्पना इस प्रकार है :-

१. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
२. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थी के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
३. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
४. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

५. समस्या का परिसीमांकन

१. वर्तमान शोध अंबेडकर नगर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
२. अध्ययन केवल अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
३. अध्ययन केवल कक्षा 9, 10, 11 व 12 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
४. 100 विद्यार्थियों को शोध में शामिल किया गया है। 50 सामान्य विद्यार्थी, 50 अस्थि विकलांग विद्यार्थी।
५. अध्ययन को केवल तीन क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया है। (क) संवेगात्मक (ख) सामाजिक (ग) शैक्षिक

तालिका १: अस्थि विकलांग विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थी के प्राप्त प्राप्तांक

	संवेगात्मक समायोजन		सामाजिक समायोजन		शैक्षिक समायोजन		सम्पूर्ण समायोजन	
	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी
औसत प्राप्तांक	20	16	24	19	22	15	66	50
Z प्राप्तांक	+0.60	-0.08	+0.97	+0.23	+0.53	-0.41	+0.70	-0.09

६. शोध अध्ययन का निष्कर्ष

उपर्युक्त तालिका में सामान्य तथा अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के समायोजन का आँकड़ा प्रस्तुत किया गया है। अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आयाम संवेगात्मक समायोनज का औसत प्राप्तांक 20 तथा Z. प्राप्तांक +0.60 हैं। वहीं सामान्य विद्यार्थियों के सम्बन्ध में संवेगात्मक समायोजन का औसत प्राप्तांक 16 तथा Z प्राप्तांक-0.08 हैं। तालिका को देखने से स्पष्ट है कि संवेगात्मक समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया वहीं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में संवेगात्मक समायोजन का स्तर औसत समायोजन से निम्न पाया गया है। यह कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन कम हो पाता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आयाम शैक्षिक समायोजन का औसत प्राप्तांक 22 तथा Z प्राप्तांक +0.53 हैं जबकि सामान्य विद्यार्थियों का औसत प्राप्तांक 15 तथा Z. प्राप्तांक -0.41 हैं है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि शैक्षिक समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया जबकि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन का स्तर औसत समायोजन स्तर से निम्न पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन भी सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा कम होता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के पूर्ण समायोजन आयाम का औसत प्राप्तांक 66 तथा Z प्राप्तांक +0.70 है जबकि सामान्य विद्यार्थियों का पूर्ण समायोजन का औसत प्राप्तांक 50 तथा Z प्राप्तांक -0.09 है। इससे स्पष्ट है कि पूर्ण समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया जबकि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में पूर्ण समायोजन का स्तर औसत समायोजन स्तर से निम्न पाया गया। इस प्रकार से स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों का सम्पूर्ण समायोजन अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है।

संदर्भ ग्रन्थ

१. इरफान, ए. एण्ड मोहम्मद ए.एस. (2010). सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड सोशल एडजेस्टमेन्ट एमंग फिजिकली हैण्डीकैप्ड पर्सन, यूरोपियन जर्नल्स ऑफ सोशल साइन्स वा 15

२. गैरेट, हेनरी ई., स्टेटिक्स इन साइकोलाजी एण्ड एजूकेशन

३. धई व सेन (1985). भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, नई दिल्ली।

४. प्रधान, राजश्री (1993). सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट ऑफ हैण्डीकैप्ड चिल्ड्रेन इन इन्टीग्रेटेड एण्ड सेगरेगेटेड सेटिग्स, पी-एच०डी० शिक्षाशास्त्र, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय ।

५. बाला (1985). भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, नई दिल्ली।

६. भार्गव, महेश (2001). आधुनिक मनोवैज्ञानिक मापन, 13वाँ संस्करण, भार्गव बुक हाउस, भार्गव भवन, आगरा।